Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

राजस्थान के धौलपुर जिले में स्वदेशी पर्यटन का भू–स्थानिक विश्लेषण

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

राजस्थान के धौलपुर जिले में स्वदेशी पर्यटन का भू–स्थानिक विश्लेषण

Kartar Singh

Scholar, Geographical Department, Maharishi Dayanand Saraswati University, Ajmer

----------♦----------

प्रस्तावना

आदिकाल से ही मानव जीवन में पर्यटन का अपना एक विशेष महत्व है। प्रारम्भ से ही मानव ने अपने जन्म स्थान से लेकर अन्य स्थानों का भ्रमण अपनी जिज्ञासाओं को शान्त करने तथा कुछ अन्य खोजने की कोशिश में शुरू किया था। भ्रमण एक महत्वपूर्ण मानवीय क्रिया है। पुराकाल में मानव भोजन व आवास के लिए एक स्थान से दूसरे की यात्रा करता था। परन्तु समय व युग के परिवर्तन से उसकी यात्राओं के उद्देश्यों में परिवर्तन देखा गया। वर्तमान युग में मानव अपनी जीवन शैली में परिवर्तन हेतु कुछ समय के लिए अपने मूल स्थान से दूसरे स्थान की ओर यात्रा करता है। यह कुछ समय का स्थान परिवर्तन ही पर्यटन कहलाता है।

मानव के अस्थायी रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए गमन करने को पर्यटन कहा जाता है। पर्यटन का महत्व पं. जवाहर लाल नेहरू के निम्न उदाहरण से समझा जा सकता है –

"हमें देशी–विदेशी मित्रों का स्वागत करना चाहिए न केवल इसलिए कि पर्यटन से विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है बल्कि इसलिए कि पर्यटन से आपसी सद्भावना और सूझबूझ की ज्यादा भावना बढ़ती है, आज जितनी आवश्यकता इस सद्भावना की है उतनी किसी चीज की नहीं है।"

उक्ततथ्य से विदित होता है कि पर्यटन एक माध्यम है जो मानव का प्रकृति के साथ समायोजन स्थापित करने में सहयोग देता है। यह तथ्य पर्यावरण भूगोल को विकृत होने से रोकने को परिलक्षित करता है।

आज पर्यटन का प्रत्येक देश के सामाजिक व आर्थिक ढाँचे पर गहरा प्रभाव देखने में आता है। पर्यटन के बढ़ते प्रभाव का पर्यावरण पर सीधा असर पड़ रहा है। वर्तमान में यह असर सकारात्मक व नकारात्मक दोनों रूपों में दृष्टिगत हो रहा है। जहाँ एक ओर पर्यटन के बढ़ते प्रभाव के कारण प्रत्येक क्षेत्र के पर्यटन केन्द्रों का समुचित विकास हो रहा है वहीं दूसरी ओर पर्यटन केन्द्रों के समुचित रख–रखाव के कारण उस क्षेत्र विशेष के सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक ढ़ाँचें में भी परिवर्तन महसूस किया जा रहा है।

राजस्थान का पिछले एक दशक में अति लोकप्रिय पर्यटक राज्य के रूप में उद्‌गम हुआ है। जहाँ 1973 में राज्य में कुल 20 लाख देशी व विदेशी पर्यटक आये थे वहीं यह संख्या बढ़कर 2000 में 79.97 लाख तथा 2004 में 85.79 लाख तक पहुँच गई है। राज्य में पर्यटन व्यवसाय की विपुल संभावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए राज्य सरकार द्वारा पर्यटन को विशिष्ट दर्जा देते हुए इसे 1989 में उद्योग घोषित किया जा चुका है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

धौलपुर को पूर्वी राजस्थान का प्रवेश द्वार होने का गौरव प्राप्त है। यह 15 अप्रैल, 1982 को राज्य का सत्ताईसवां जिला बना है। इसका क्षेत्रफल 2034 वर्ग कि.मी. है, जो कि आगरा–ग्वालियर के मध्य राष्ट्रीय राजमार्ग नम्बर तीन पर बसा हुआ है। इसके पूर्व में चम्बल नदी तथा पश्चिम दिशा में पार्वती नदी की सीमाएं हैं। राजस्थान का यह जिला उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश की सीमाओं पर दो नदियों की धार के बीच स्थित है। धौलपुर में विश्व की सबसे पुरानी अरावली पर्वत की श्रृंखला गुजरती है। इन्हीं श्रृंखलाओं की गोद से निकले पत्थर विश्वविख्यात हैं।

धौलपुर की स्थापना पाल राजाओं ने अपने शासनकाल 715 ई. से 975 ई. में की थी। सामरिक महत्व का यह जिला होने के कारण यहाँ ग्वालियर नरेशों, कभी मराठों का तो कभी मुगलों का और कभी भरतपुर के जाट राजाओं का शासन रहा है। राजपूत राजा मालदेव द्वारा 1632 ई. में निर्मित यहाँ के किले का सन् 1640 ई. में पुनरूद्धार करवाया। यहाँ का शेरगढ़ का किला भारत के तीन प्रमुख किलों में से एक महत्वपूर्ण दुर्ग माना जाता है।

धौलपुर राजस्थान के पूर्वी भाग में अरावली की श्रृंखलाओं के समानान्तर पाया जाता है। यह $26^0 22'$ से $27^0 50'$ तक उत्तरी अक्षांश व $76^0 53'$ से $78^0 16'$ पूर्वी देशान्तर में फैला हुआ है। यह क्षेत्र रेल, सड़क आदि मार्गों से जुड़ा हुआ है।

शोध पत्र के उद्देश्य

1. राजस्थान में स्वदेशी पर्यटकों के आगमन व वृद्धि का अध्ययन करना।

2. राजस्थान में धौलपुर जिले के सन्दर्भ में स्वदेशी पर्यटकों के आगमन का अध्ययन करना ।

3. राजस्थान और धौलपुर में विदेशी एवं स्वदेशी पर्यटकों का तुलनात्मक विश्लेषण करना ।

विधि तन्त्र एवं आंकड़ों का संकलन

प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक आंकड़ों का सहारा लिया गया है। द्वितीयक आंकड़ों का संकलन राजस्थान सरकार एवं भारत सरकार के प्रकाशित व अप्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं, विभिन्न विभागों एवं पर्यटन विभाग के अधिकारियों से लिये गये हैं तथा

www.ignited.in

प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है उपरोक्त शोध पत्र अनुभाविक शोध पर आधारित है।

राजस्थान में स्वदेशी पर्यटको का आगमन एवं वृद्धि

यद्यपि पर्यटन राजस्थान राज्य में विदेशी मुद्रा अर्जित करने का पांचवा बड़ा स्त्रोत है (योजना 30 जून) परन्तु सरकार के पर्यटन की ओर ध्यान देने से व अच्छी सरकारी नीतियों से राजस्थान में पर्यटन विदेशी मुद्रा अर्जित करने का पहला स्त्रोत बन गया है। सांस्कृतिक धरोहर रखने वाले इस राज्य में पर्यटन स्थलों की कोई कमी नहीं है। जो वर्षों से सैलानियों के आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं। राजस्थान में कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जहां कोई न कोई सौन्दर्य छुपा नहीं हो। यहां आबू पर्वत जैसे दर्शनीय स्थल, दिलवाड़ा के जैन मंदिर, नक्की झील, गांधी उद्यान, रामकुण्ड, धुलेश्वर मंदिर, करोड़ी ध्वज, भर्तहरी की गुफा, रेवती कुण्ड, गुरू शिखर, नीलकण्ठ महादेव, ढाई दिन का झोपड़ा, नाथद्वारा, पुष्कर आदि स्वदेशी पर्यटकों के आकर्षण केन्द्र रहे हैं। जहां एक ओर झीलों की नगरी उदयपुर है वहीं दूसरी छोर पर साइबेरिया से उठकर आने वाले अतिथि पक्षियों की क्रीड़ास्थली राष्ट्रीय केवलादेव घना पक्षी अभ्यारण्य भरतपुर व धौलपुर का वन विहार गेम संचुरी तथा दमोह का प्राकृतिक जल प्रपात है। राजस्थान की प्राकृतिक सुषमा एवं शिल्प कलाओं से परिपूर्ण चतुरंगी महल, मंदिर व पहाड़ियों पर निर्मित दुर्गम दुर्ग एवं प्रासादों, सुरम्य झीलों वाले घने जंगल एवं मनमोहक रंग–बिरंगी राजस्थान पौशाकें आदि स्वदेशी पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित करती है।

राजस्थान राज्य में पर्यटन विभाग के प्रयत्नों के फलस्वरूप आने वाले पर्यटकों में निरन्तर वृद्धि हो रही है जहां वर्ष 1980 में लगभग 24.50 लाख स्वदेशी पर्यटक आये थे वहीं वर्ष 1991 में यह संख्या बढ़कर 47 लाख तथा 2004 में बढ़कर 1.60 करोड़ हो गई है। इन वर्षों के दौरान राजस्थान में मुख्यतः दिल्ली, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, गुजरात से आने वाले तीर्थ यात्रियों एवं साहित्य प्रेमियों का आगमन अधिक रहा है।

वर्ष 1991 से 2004 के मध्य राज्य के विभिन्न पर्यटक स्थलों पर आने वाले पर्यटकों की संख्या एवं प्रतिशत वृद्धि में विशेष उतार चढ़ाव हुआ है। वर्ष 1991 से 2004 तक अधिकतर वर्षों में पर्यटकों की वृद्धि धनात्मक ही रही है परन्तु सन् 1994 में (–) 14.32 प्रतिशत रही है अन्यथा अन्य सभी वर्षों में पर्यटकों की संख्या में वृद्धि इंगित की गई है। पर्यटकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि का क्षेत्र केन्द्रीय व राज्य सरकार की नीतियाँ व साम्प्रदयिक परिस्थितियों में सुधार आदि को माना है। उपरोक्त तथ्य के आधार पर कह सकते हैं कि वर्तमान में पर्यटकों की संख्या एवं वृद्धि राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों से अर्न्तसम्बन्धित होती है।

राजस्थान के धौलपुर जिले के संदर्भ में स्वदेशी पर्यटको का आगमन

धौलपुर को राजस्थान का पूर्वी द्वार कहा जाता है। इसकी अवस्थिति, विकसित यातायात, अन्य राज्यों से समीपता, प्रशासनिक महत्व, दर्शनीय स्थल तथा कुछ दुर्लभ दृश्य क्षेत्र अन्य क्षेत्रों के लोगों को बरबस ही आकर्षित करती है, जो प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सैलानियों का आगमन होता है। सम्भवतः ग्रामीण पर्यटन तीर्थाटन के उद्देश्य से भ्रमण करते हैं वे तीर्थराज मचकुण्ड के तीर्थाटन हेतु आये हैं जो शहर से अधिक दूर स्थित नहीं है। केन्द्रीय, राज्य एवं नगरीय स्तर पर पर्यटन से संबंधित कई विभागों के एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रयासों के फलस्वरूप आने वाले विदेशी पर्यटकों में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

भौगोलिक व राजनीतिक दृष्टि से दोनों से ही धौलपुर महत्वपूर्ण स्थान रखता है। राजस्थान का पूर्वी द्वार कहलाने वाला धौलपुर, भरतपुर, सवाईमाधोपुर, करौली जैसे महत्वपूर्ण पर्यटन केन्द्रों तथा मध्यप्रदेश व उत्तरप्रदेश जैसे देश के प्रमुख राज्यों से जुड़ा हुआ है। इस क्षेत्र की इसी अवस्थिति के कारण धौलपुर पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण बन गया है। 1998 में जहाँ स्वदेशी पर्यटकों की संख्या 10550 थी वहीं 2000 में यह संख्या बढ़कर 19345 व सन् 2004 में 38983 हो गई है जो धौलपुर के पर्यटन महत्व को दर्शाते हैं।

1990 से 1995 तक यहाँ के रेवाइन्स में डाकूओं का खतरा रहता था जिससे पर्यटकों की संख्या में कोई वृद्धि नहीं हुई थी परन्तु सरकार व स्थानीय प्रशासन के डाकूओं व अपराधियों के खिलाफ छेड़े अभियान से इनकी संख्या में कमी आई, जिसके उपरान्त पिछले दशक से (2000–2010) तक यहाँ का पर्यटन व्यवसाय अपने पैरों पर खड़ा हो रहा है। धौलपुर में स्थित ऐतिहासिक महत्व के पर्यटक स्थलों पर पर्यटन विभाग व स्थानीय प्रशासन के ध्यानाकर्षण के बाद इनका जीर्णोद्वार किया जा रहा है। इन विभागों द्वारा यहाँ मूलभूत सुविधाओं जैसे (आवास व्यवस्था तथा यातायात व्यवस्था) का भी क्रमबद्ध विकास किया जा रहा है। पर्यटन विभान ने सन् 2006 में देशी व विदेशी पर्यटकों की संख्या को दुगुना करने का लक्ष्य रखा है।

राजस्थान व धौलपुर में विदेशी व स्वदेशी पर्यटकों का तुलनात्मक विश्लेषण

राजस्थान एवं धौलपुर में पर्यटन के बढ़ते हुए विकास के कारण आने वाले विदेशी एवं स्वदेशी पर्यटकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। वर्ष 1991 में विदेशी पर्यटक 494150 लाख तथा स्वदेशी पर्यटक 43.00 लाख से अधिक राजस्थान भ्रमण पर आये थे। लेकिन इनमें से धौलपुर आने वाले पर्यटकों की संख्या 1514 व 55 थी। इसी प्रकार जहां 1995 में विदेशियों की संख्या मात्र 65 थी वहीं 2004 में बढ़कर यह 3195 हो गई थी जो कि यहां के पर्यटन व्यवसाय के लिए अच्छा संकेत है।

निष्कर्ष

भारतमे में स्वतन्त्रता के बाद ही देखा जाये तो सरकार ने पर्यटन के विकास पर बराबर ध्यान दिया है। शुरू से ही विभिन्न योजाओं द्वारा पर्यटन हेतु पूँजी का वितरण किया जा रहा है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना 1957–62 के अन्तर्गत राजस्थान पर्यटन स्थलों के विकास हेतु 16.19 लाख रूपये निर्धारित किये गये थे। इनमें राजस्थान सरकार के द्वारा 10.84 लाख तथा केन्द्रीय सरकार ने 5.35 लाख रूपये व्यय करने का प्रस्ताव रखा था। तृतीय पंचवर्षीय योजना 1962–67 के अन्तर्गत 24.35 लाख रूपये व्यय करने का प्रावधान रखा गया। इसके बाद भी आगे की पंचवर्षीय योजनाओं में पर्यटन हेतु पूँजी का निरन्तर विस्तार किया गया था। इन योजनाओं मे पर्यटन विकास हेतु पूँजी के विस्तार से राजस्थान में पर्यटन का एक आधारभूत ढाँचा तैयार हो गया

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- Sharma, K.K. (1991) Tourism in India.

www.ignited.in

- Mishra, C. (1961) Geography of Rajasthan National Book Trust, New Delhi.
- Tod James (1978) Annals and Antiquities of Rajasthan, 2 Vol. Delhi.
- Rajiv Gandhi Tourism Development Mission Policy of State Govt. of Rajasthan, 2002
- National Tourism Policy of India.
- Discover Rajasthan - Department of Tourism, Art and Culture, Govt. of Rajasthan, March, 1997.
- Rajasthan Tourism Development Corporation - Booklet.

From:-

करतार सिंह ब्व अनिल सिंह,

सी–54, मूर्तिकला कॉलोनी,

गोपालपुरा बाईपास, टोंक रोड़,

जयपुर – 302018

मोबाईल नं. 9460938193

ई–मेलः–kartars82@gmail.com